

कुछ प्रमुख लोकोक्तियाँ और मुहावरे

लोकोक्तियाँ और मुहावरे साहित्य व समाज दोनों का ही महत्वपूर्ण अंग हैं। समाज में अनुभवजन्य ज्ञान के आधार पर इनका जनभाषा के रूप में प्रसंगानुसार प्रयोग होता है।

लोकोक्ति को 'कहावत' भी कहते हैं। लोकोक्ति और मुहावरे में विशिष्ट अंतर यह है कि 'लोकोक्ति' अपने आप में एक पूर्णवाक्य होता है जिसका प्रायः तात्पर्यार्थ/लक्ष्यार्थ ही ग्राह्य होता है। मुहावरा (वाग्बंध) वाक्यांश होता है तथा उसका वाक्य में पदबंध के रूप में प्रयोग होता है तथा लोकोक्ति की तरह इस पद-समूह का भी अभिधेयार्थ से भिन्न कोई विशिष्ट लक्ष्यार्थ होता है। लोकोक्ति व मुहावरों के उचित प्रयोग से भाषा अधिक प्रभावी, सरस तथा मनोरंजक बन जाती है।

यहाँ कुछ प्रमुख तथा उपयोगी लोकोक्तियाँ व मुहावरे संकलित रूप में दिये जा रहे हैं।

3.1 लोकोक्तियाँ

अंगूर खट्टे हैं	= किसी महत्वपूर्ण वस्तु को प्राप्त न कर पाने पर उसी की निंदा करना।
अंत भला तो सब भला	= जिस कार्य की समाप्ति अच्छी तरह हो जाए, उसे सफल समझना चाहिए।
अंधा क्या चाहे? दो आँखें	= अभीष्ट वस्तु मिल जाए तो असीम प्रसन्नता स्वाभाविक है।
अंधा गुरु और बहरा चेला मांगे गुड़ तो देता ढेला	= 1. बेमेल जोड़ी का परिणाम बुरा होता है। 2. विचित्र और बेमेल जोड़ी हास्यास्पद होती है।
अंधा बाँटे रेवड़ी फिर फिर अपनेन्ही देय	= संकुचित या स्वार्थी लोगों की प्रवृत्ति अपनों को ही लाभ पहुँचाने की होती है।
अंधी पीसे, कुत्ता खाए	= 1. व्यक्ति के प्रयत्न/परिश्रम का लाभ उसे न मिलकर किसी और को मिलना। 2. प्रयत्न/परिश्रम व्यर्थ जाना।
अंधे के आगे रोए, अपने दीदा (नैना) खोए।	= किसी मूर्ख या नासमझ व्यक्ति के सामने अपनी व्यथा सुनाना व्यर्थ है।
अंधे के हाथ बटेर	= बिना किसी परिश्रम के किसी व्यक्ति को संयोगवश कोई अच्छी वस्तु मिल जाना।